B.A. (HONS) Part III
Sub: Sanskrit
Paper- VII

समास की परिभाषा

Dr. Savitri Singh
Associate Professor
Deptt. of Sanskrit
R.M.C. Sasaram

(1) समसनम् समास: → अनेक पदों का एक पद बन जाना समसन कहलाता है। समास शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार से है:— सम् + √अस् + घञ्, समास का अभिप्राय है संक्षेपीकरण। इस प्रक्रिया के द्वारा एक से अधिक पद एक बन जाते हैं और शब्द छोटा हो जाता है। जैसे — राज्ञ: पुत्र: इति राजपुत्र:।
श्वेतं वस्त्रं यस्य स: = श्वेताम्बर आदि।

(2.) समर्थ: पदविधि: → यह परिभाषा सूत्र है। समर्थ पदों की ही पदविधि होती है। पदविधि होने के कारण समास उन्हीं पदों का होता है जिनका परस्पर सामर्थ्य हो। पद अर्थात् सुबन्त को उद्देश्य बनाकर जो विधि होती है वह पदविधि है। सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है। सुबन्त पद है इसलिए समास पद विधि है।

(3.) सूत्र → सुपो धातुप्रातिपदिकयो: → समास के द्वारा अनेक पदों को एक कर दिया जाता है। यह क्रिया उन्हीं पदों में होती है जिनका आपस में सामर्थ्य होता है। सूत्र बतलाता है कि समास करते समय पदों अर्थात् धातु और प्रातिपदिक के विभक्ति का लोप कर दिया जाता है और तब शब्द आपस में मिलते हैं। जैसे— राज्ञ: पुत्र: इति राजपुत्र:।

(4.) सूत्र → उपसर्जनं पूर्वं या प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् → समास में उपसर्जन का पूर्व निपात अर्थात् पूर्व प्रयोग होता है। समासशास्त्र में प्रथमा निर्दिष्ट की उपसर्जन संज्ञा होती है। समास करने की प्रक्रिया में किस शब्द को पहले रखा जाय यह विचार आता

है। इसका समाधान करने के लिए इस सूत्र की व्यवस्था की गयी है। समास करने वाले सूत्र में जो पद प्रथमान्त हो उसके द्वारा विग्रह वाक्य में स्थित जिस पद का बोध होता है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है और उसका प्रयोग पहले होता है। जैसे समाससूत्र "अव्ययं विभक्ति— सूत्र में अव्ययं पद प्रथमान्त में आया है। अतः हरि, ङि, अधि इस अलौकिक विग्रह में स्थित अधिपद का ज्ञान होता है अतः इसकी उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वं" सूत्र से अधिका पूर्व प्रयोग करके अधिहरि रूप सिद्ध हुआ।

केवल समास → जिस समास का कोई विशेष नाम नहीं कहा गया, उसको केवल समास कहा गया। इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी गयी है— "विशेष संज्ञाविनिर्मुक्तः केवलः समासः" यह समास कहीं सुबन्त का सुबन्त के साथ कहीं सुबन्त का तिङन्त के साथ और कहीं सुबन्त का इव आदि शब्दों के साथ होता है।

जैसे— पूर्वम् भूतः इति भूतपूर्वः।

पूर्वम् उक्तः इति पूर्वोक्तः।

(ख) अव्ययीभाव → जहाँ प्रायः पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। इसकी परिभाषा इस प्रकार से है—

"प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः।"

जैसे— रूपस्य योग्यम् इति अनुरूपम्।

विष्णोः पश्चात् इति अनुविष्णु।

Contd....